

आसो सुॢ १४, मंगलवार ता. २०-१०-१९६४  
श्री तारुणस्वामी द्वारा रचित श्रावकाचार, गाथा-  
२९४थी २९६, ३०५, ३२५, ३३३, ३४६, ३५६, ३९२,  
३९९, ४००. प्रपयन-२४

श्रावकाचार तारुणस्वामी रचित है. ँसमें मिथ्यात्व और समकितका ... सुभ-दुःभका कारण बताते हैं. २९६. २९४, २९५ आदमें लेंगे.

मिथ्यात्वं परमं दुःखं, सम्यकं परम सुखं।

तत्र मिथ्यामतं तत्त्वं, शुद्ध सम्यक् सार्धयं।।२९६।।

ये श्रावककी मूल बात है. मिथ्यादर्शन परमदुःभका कारण है. समजमें आया? निर्धनता, प्रतिकूलता, नरकगति आदि दुःभका कारण नहीं है. मिथ्याश्रद्धा, वास्तविक तत्त्वका लान नहीं है और विद्ध मान्यता और विद्ध मान्यता करनेवालेका विश्वास करके विद्ध मान्यता करना. समजमें आया? देव-गुरु-शास्त्रकी भजर नहीं, क्या देव-गुरु-शास्त्र है, क्या देव-गुरु-शास्त्र कहते हैं, और विपरीत मानना. आत्माका स्वभाव शुद्ध ज्ञायक है, उसको रागसहित अंतर मानना पुण्यकी क्रियासे अपनेमें धर्म मानना. पापके परिणामसे अपनेमें मज्ज मानना, परकी क्रिया में कर सकता हूं, परकी रक्षा कर सकता हूं, ऐसा मानना, ऐसा माननेवालेका विश्वास करना, वह सब मिथ्यात्वभाव है. ... मिथ्यात्वमें तो. २९४-२९५ आदमें लेंगे. समजमें आया? है न? पंडितज!

'मिथ्यात्वं परमं दुःखं' मिथ्या-विपरीत मान्यता, उलटी श्रद्धा, ज्ञानपना लवे थोडा हो, लेकिन उलटी श्रद्धा मलान पाप है. ज्ञानपना आरह अंग नौ पूर्वका पठ ले. ... दूसरे बोधकी तो बात ही नहीं है, वह सब तो अज्ञान है. दूसरा ज्ञानपना करना वह सब तो अज्ञान, अज्ञान और अज्ञान है. शास्त्रका पठना, आरह अंग नौ पूर्व पढा, लेकिन दृष्टि सम्यक् किये बिना उसका ज्ञान ली अज्ञान कहनेमें आता है. समजमें आया?

'मिथ्यात्वं परमं दुःखं' विपरीत मान्यता निगोदका कारण है. परम दुःभकी व्याख्या वह है. परमदुःभ समजे? निगोदके सिवा ऐसा दुःभ नहीं है. निगोद समजे? आलु, काँ, अक शरीरमें अनंत जव. कहते हैं मिथ्यादृष्टि जैसा कोँ दुःभ नहीं है. मिथ्यादृष्टि आरह अंग पठ लेवे, नौ पूर्व पढे, जगतकी विचक्षणता, जगतका सब बोध कर ले, फिर ली मिथ्यादृष्टिपना नहीं छोडे तो मिथ्यात्वके कारण निगोदमें मलदुःभ पायेगा. समजमें आया? ... निगोदं गच्छेँ. मिथ्याश्रद्धा क्या है, सम्यदर्शन क्या है ये मालूम नहीं.. समजे? और (माने कि) लम जैन हैं.

मुमुक्षु :- लेकिन जैनमें जन्मा एो वल मिथ्यादृष्टि थोडा एोता है.

उत्तर :- जैनमें धूलमें जन्मा है. जैन कहां है? जैनमें जन्मा. ओरी पर लिखा केसर, तो क्या केसरकी ओरी एो जाती है? उपर तो बारदान है. जैन नाम दिया बारदानका, एम जैन हैं. उसमें क्या आया? अनंत बैर ऐसा ब्रह्मचर्य भी अनंत बैर पावा, दया भी अनंत बैर (पाली), भाव किया, हां! दयाका भाव. छकायकी (दया) पाव नहीं सकता. ऐसा अनंत बैर व्रत, नियम किया. अपने आ गया है. उग्र तपं व्रतं. आ गया न? वल तो अनंत बैर किया. लेकिन मिथ्याश्रद्धा जो अनंतकालमें ऐक सेकंड ... गई नहीं. तो वल मिथ्याश्रद्धा क्या है, सम्यग्दर्शन किसको कहते हैं, मालूम नहीं. सबका समान धर्म. समजमें आया? एमारा भी समान है, आपका भी समान है. ... सब .. करते हैं.

ऐसा मिथ्यात्वभाव परम दुःख नाम निगोदका कारण है. समजमें आया? पढा-लिखा उसका सब पानीमें जायेगा. मिथ्याश्रद्धा रभनेवाला-परकी किया मैं कर सकता हूं, परको सुख-दुःख एम दे सकते हैं, परसे एमारा कल्याण (एो जायेगा), अथवा परका आशीर्वाद मिले तो एमारा कल्याण एो जाये, ऐसी चीज है नहीं. समजमें आया? मिथ्यादर्शन परमदुःखका कारण है. निगोदका कारण है. कुंदकुंदाचार्य तो कहते हैं, ऐक वस्त्रका धागा रभकर एम मुनि हैं ऐसा माने, मनावे, माननेको संमत एो, निगोदं गच्छई. क्योंकि वास्तविक सर्वज्ञ परमात्माने जो तत्त्व कहा, उसमें ऐक भी इेरकार एो (तो) सारे नौ तत्त्व बिगड जाते हैं. समजमें आया? ऐसी मान्यता करनेवाला निगोदमें जायेगा.

'सम्यकं परम सुखं'. समकितके सिवाय कहीं सुख है नहीं. समकित्ती मोक्षमें जानेवाला है. अल्पकालमें ऐक-दो भवमें उसकी मुक्ति होगी. भवे ज्ञान थोडा एो, किया वर्तमान आचरण न एो, लेकिन सम्यग्दर्शन शुद्ध एो (तो भी उसकी मुक्ति होगी). श्रेणिक राजा. कोई त्याग नहीं किया, व्रत, नियम था नहीं. सम्यग्दर्शन शुद्ध था तो उसके कारण ऐकाद भवमें भविष्यमें तीर्थकर होंगे. समजमें आया? आगामी यौबीसीमें तीर्थकर होंगे. वल सम्यग्दर्शनका प्रताप है. सेठी!

'सम्यकं परम सुखं'. कएो, समजमें आया? सम्यग्दर्शन.. ओ..एो..! अंतर आत्मा.. ऐक किया रागका कर्ता मैं, पुण्यका, दयाके भावका कर्ता भी मैं नहीं तो परकी कियाका मैं कर्ता नहीं. ऐसा अपना शुद्ध चैतन्यमें ज्ञाता-दृष्टाके अनुभवमें प्रतीत (एोना), ये सम्यग्दर्शन अनंत आनंदका-मोक्षका कारण है. उसकी तो किमत नहीं है अभी. भाव किया करे, व्रत करे, किया करे, तप करो (तो).. ओ..एो..! बडा संयमी है. समजमें आया? और व्रतादि न एो तो कहे, त्याग है? कोई त्याग नहीं है, भगवानका मार्ग तो त्याग है. सुन तो सही. समजमें आया? सम्यग्दर्शन बिनाका त्याग सब नरक, निगोदमें ले जानेवाला है. अभिमान है उसको अंदरमें. स्वभावका भान नहीं, एमने किया, ऐसा किया. कहते हैं,

‘सम्यकं परम सुखं’. समकितके सिवा कोई परमसुखका कारण जगतमें है ही नहीं. समजमें आया?

‘तत्र मिथ्यामतं तत्त्वं’ इसलिये मिथ्याश्रद्धा, मिथ्या अभिप्राय छोडकर ‘शुद्ध सम्यक् सार्धयं’. शुद्ध सम्यग्दर्शन अपना साथ बनाना चाहिये. सम्यग्दर्शनका साथ बनाना चाहिये. सथवारा, सथवाराको क्या कहते हैं? साथीदार. चलता है न? साथीदार होता है. सम्यग्दर्शनको साथीदार बनाना. अपना शुद्ध ज्ञायक परमात्मा. दूसरा बोध हो न हो, दुनिया माने, न माने, व्रत संयम हो के न हो, परंतु सम्यग्दर्शन यथार्थ हुआ, अल्पकालमें वह सम्यग्दर्शनके प्रतापसे केवलज्ञान और मोक्ष पायेगा. कहां, समजमें आया? अब, २८४. वह २८६के पहले थी. वह पहले आ गया था. पहले आठ व्याख्यान हुआ न? उसमें वह व्याख्यान आ गया था. पहले सोलह व्याख्यान हुआ, उसमें आठ गाथाका आ गया. इस गाथामें नहीं आया, देओ! २८४.

मिथ्या संग न कर्तव्यं, मिथ्या वासना वासितं।

दूरेहि त्यजंति मिथ्यात्वं, देसो त्याग च कर्तव्यं।।२९४।।

विपरीत मान्यता, अेक कण भी सूक्ष्म मिथ्यात्व. टोडरमलज्जने सातवें अध्यायमें बहुत लिया है. जैन द्विगंभरमें जन्मा फिर भी सूक्ष्म भी मिथ्यात्व रहता है. व्यवहारसे निश्चय प्राप्त होता है, निश्चयाभासी व्यवहार विकल्प आता है, उसको जानते नहीं, मानते नहीं. सातवें अध्यायमें बहुत अधिकार लिया है. कहते हैं कि मिथ्यात्वका संग न करना चाहिये. मिथ्यादृष्टिका संग नहीं करना चाहिये और मिथ्यात्वका भाव नहीं करना चाहिये. जिसकी दृष्टि विपरीत है उसका संग छोडना चाहिये. नहीं तो कुसंगसे मिथ्यात्वकी लकड़ी घुस जायेगी.

मुमुक्षु :- ...

उत्तर :- परद्रव्य नुकसान क्या करे? लेकिन ... संगको अच्छा जाने तो उसकी उलटी प्रतीति हो जायेगी. समजमें आया? उलटी प्रतीति करा देगा कि ऐसा है, ऐसा नहीं है और ऐसा है. अपनी मिथ्याश्रद्धा है दूसरमें (तो) बना दे. माने तो बना दे. माने बिना क्या? यहां लिखा है न, देओ! ‘मिथ्या वासना वासितं’ मिथ्यात्वकी वासना-गंध थोडी बैठी हो. उलटी श्रद्धा-अेक विकल्पसे धर्म होता है, निमित्तसे कार्य होता है, मैं परका कार्य कर सकता हूं, कोई भी, थोडी भी सूक्ष्म. समजमें आया? सेठी!

‘दूरेहि त्यजंति मिथ्यात्वं’ छोड दे, दूर छोड दे. ‘देसो त्याग’ देस आदिका त्याग करना चाहिये. ऐसा क्षेत्र हो तो छोड देना चाहिये. उलटा संग हो, जिसमें मिथ्यात्वका पोषण मिले, मिथ्यात्वकी प्रपुष्णा-कथन मिले. सत्ये तत्त्वका भान नहीं हो, ऐसा क्षेत्र छोड देना चाहिये.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- वल मेरे मनमें आया था, तुम बोले. विमलयंदज्ज! वलं साधन नहीं था (तो) छोड दिया. नहीं. विमलयंदज्जको देखा है न? अभी थे. बहुत वांचन, उसका टिमाग बहुत है. छोटी उम्र है. उम्र तो २८ वर्षकी है, लेकिन टिमाग... शास्त्रका वांचन, लं! धवल, ज्यधवल, मलाधवल, समयसार, प्रवचनसार आदि सब शास्त्र. दूसरी कोई बात नहीं. ... पढा, और ओक ओर शास्त्र. अस, दोके सिवा, कोई तीसरी बात ली नहीं. युवान है, अभी तो २८ सालकी उम्र है. अभी युवान है. उसकी समजनेकी भावना, समजनेकी बहुत. और ज्यधवल, मलाधवलका बहुत वांचन. याददास्त भी बहुत. आस्थावाला आदमी, लं! आस्था. वलं ठीक नहीं था. ३५० पगार मिलता था. वलं.. क्या करते हैं? दालमिया नगर. नहीं, नहीं.

मुमुक्षु :- दालमिया नगर जैनका गांव है.

उत्तर :- वलं कलं भान था? जैन नाम धराये संप्रदायका. जैन किसको कलना? जैन किसको कलना? जैनकी दृष्टि क्या? जैन क्या करते हैं? वीतरागका क्या मार्ग है? अभी सत्य उसे सुननेमें आया नहीं, श्रद्धा कलंसे लावे? समजमें आया? देओ! अपने आता है न? पद्मनंटी पंचविंशतिमें आता है. पद्मनंटी पंचविंशतिमें आया था. देस छोड देना. जिससे मिथ्यात्व-विपरीत प्रज्ञा (लोती लो, वल) संग छोड दे. समजमें आया? कुंदकुंदाचार्य तो मूलाचारमें वलं तक करते हैं, मूलाचारमें, कि जिसकी दृष्टिमें विपरीतता है, (उसने) दूसरा ज्ञानपना चाहे जितना किया लो और व्रत, नियम भी लो, लेकिन जिसकी दृष्टिमें विपरीतता है (उसका) संग छोड देना. क्या करें? ये संग छोड, शादी कर ले, स्त्रीका संग कर. परंतु ऐसा संग छोड दे. ऐसा पाठ लिया है. अर्थ..! पाठ है, गाथा है. है कि नहीं? लाओ तो सली. सेठ सुने तो सली. डालयंदज्ज मुखिलसे आये हैं. डालयंदज्ज करते थे, वलंसे ज्ञानेका मन नहीं करता. समजमें आया?

कुंदकुंदाचार्य पुकार करते हैं. जिसकी दृष्टि-मान्यतामें ठिकाना नहीं, समजमें आया? वलं भी सख्या, ये भी सख्या, वल भी सख्या. व्यवहारश्रद्धाका ठिकाना नहीं. निश्चय सम्यग्दर्शन तो ओक ओर रहा. करते हैं कि उसका संग नहीं करना. क्या करना? उसका संग छोड दे. कौन-सी गाथा है? दसवां अधिकार. ४८२ है. देओ! क्या करते हैं? देओ! ... करते हैं कि अभी आत्माका भान नहीं है और रागादिके वश त्याग ले लेते हैं, मुनि लो ज्ञाते हैं, और उसकी श्रद्धामें विपरीत वासना पडी है, तो उसका संग नहीं करना.

वरं गणपवेसादो विवाहस्स पवेसणं।

विवाहे रागउपपत्तिगणो दोसाणागरो।।९६।।

करते हैं कि 'वरं गणपवेसादो विवाहस्स पवेसणं' कु-ओटा संग, साधु कुसंग, विपरीत मान्यता करानेवाला. समजमें आया? उसका संग छोड दे. उसके बदले 'विवाहस्स पवेसणं'

क्या कला? ... क्या कला? 'वरं गणपवेसादो विवाहस्स पवेसणं' जोटे संगमें रहनेके बदले 'वरं विवाहस्स पवेसणं' श्रीसे शादी करना प्रधान है. क्योंकि श्रीके साथ शादी करनेमें तो चारित्रका रागका ही दोष आयेगा, मिथ्यात्वका दोष नहीं आयेगा. आलाहा..! समझमें आया? दुनियाको कठिन लगता है वर्तमानमें. बाह्य त्याग.. मूल चीज क्या है उसका भान नहीं. देजो पाठ.

'यति अंत समयमें यदि गणमें प्रवेश करेंगे तो शिष्यादिकमें मोह उत्पन्न होगा तथा मुनिकुलमें मोह उत्पन्न होनेके लिये कारणभूत जैसे पार्श्वस्थादिक पांच मुनिराजको संपर्क होगा. उनके संपर्ककी अपेक्षासे विवाहमें प्रवेश करना अर्थात् गृहमें प्रवेश करना अधिक अच्छा है. क्योंकि विवाहमें श्री आदिक परिग्रहोंका ग्रहण होता है और उससे रागोत्पत्ति होती है. परंतु गण तो सर्व दोषोंका आकार हैं.' उलटे संगकी श्रद्धाके परिचयमें रहना, 'उससे मिथ्यात्व, असंयम, कषाय, रागद्वेषादिक उत्पन्न होते हैं. विवाहमें मिथ्यात्व नहीं होगा...' बड़ी कठिन बात.

मुनि संत भावविंगी छठे-सातवें गुणस्थानमें (जुलते) आचार्य. ज्ञे, मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी, मंगलं कुंदकुंदार्यो. तीसरे स्थानमें नाम दिया. कहते हैं कि कुसंगी साधु, कुसंगी गृहस्थ, जिसकी वासनामें मिथ्यात्व पडा है, तत्त्वका कुछ भान नहीं (उसका संग करनेसे तो) विवाहमें मिथ्यात्व नहीं है, मात्र चारित्रदोष होगा. ओ.. प्रेमचंदज! देजो! ये कुंदकुंदार्यके मूलाचारकी ८६ गाथा है. दुनियाको भान कहां है. समझमें आया? बाह्य त्याग, बाह्य ये, बाह्य वेष, ये किया और वह किया. उसकी प्रतीति और उसका भरोसा. तत्त्वकी क्या विपरीतता है, भान नहीं है उसको और भान नहीं है उसको. डालचंदज!

'विवाहे रागउपपत्तिगणो दोसाणागरो' उलटी श्रद्धावाले संगमें तो अकेला पाप और मिथ्यात्वकी भान है. मिथ्यात्वकी भान है. उस दोषकी किमत नहीं, मिथ्यात्वके दोषकी जगतको किमत नहीं. निगोदका कारण है. यहां लिया न? 'मिथ्यात्वं परमं दुःखं'. वह क्या चीज है, (उसकी) भबर नहीं. कहते हैं, 'देसो त्याग च कर्तव्यं'. देस छोड देना. अब थोडा आता है, थोडा कथन आता है.

मिथ्या दूरेहि त्यजंति, मिथ्या संग न दृष्टिते।

मिथ्या माया कुटुम्बस्य, विरते सदा बुद्धे।।२९५।।

देजो! तारुणस्वामी क्या कहते हैं? मिथ्यात्वसे दूरसे ही बचना चाहिये. 'दूरेहि वाचंते'. विपरीत श्रद्धा मनावे, प्रज्ञे, कहे, दुनियाको मनावे, समझमें आया? जैसे विपरीत मान्यताके शास्त्र लिजे, 'दूरेहि त्यजंति' 'मिथ्या दूरेहि त्यजंति, मिथ्या संग न दृष्टिते'. मिथ्यात्वका संग न देजना चाहिये अथवा परिचय नहीं करना. मिथ्यात्व, मायामें इसे कुटुंबका संग बुद्धिमान सदा बचावे. क्या है देजो! माता-पिता, भाई बी यदि जैसे मिथ्या संस्कारवाले

हो (तो) छोड देना. है बैया? देओ! २९५.

'मिथ्या माया कुटुम्बस्य'. अपना कुटुंब हो, श्री हो, पति हो, भाई हो, कुटुंबके सबसे प्रिय रिश्तेदार हो, लेकिन मिथ्याश्रद्धाका संस्कार पडा है और मिथ्याश्रद्धाकी वासना दूसरेको बताते हैं कि ऐसा मार्ग है, ऐसा मार्ग है. छोड दे कुटुंबको, छोड दे पत्नीको, छोड दे पतिको, भाईको छोड दे. कडक है, कडक. परंतु सत्य है. मलान मिथ्यात्वके पापकी तो तुझे किमत नहीं है. समझमें आया? और ये राग घट गया, ब्रह्मचर्य पावा, त्याग किया, इन्द्रियदमन किया, संयम पावा, रात्रिको चोविलार करते हैं. वह सब तो किया (है). सुन तो सही. जहां मिथ्यात्वका सूक्ष्म बी शल्य पडा है, उसके कारणसे परंपरा निगोदमें जायेगा. जैसे कुसंगका त्याग करना. आला..! ये बडा कठिन, भाई! सेठी! छोड दे कुसंग, जैसे मिथ्या संगको. समझमें आया?

संग 'विरते सदा'. समझे? मिथ्यात्व, मायामें इसे हुअे कुटुंबके संगसे बुद्धिमान सदा ही बचा रहे. देओ! सदा बचा रहे. तुम्हारे साथ धर्मकी चर्चा नहीं. समझे? संसारकी बात हो तो भले, धर्मकी चर्चा नहीं. क्योंकि तुम्हारी दृष्टि विपरीत है. वह संग ... करता नहीं. कुटुंबके साथ भी नहीं करना. आलाला..! ये तो घरमें क्लेश करा दे ऐसा है.

मुमुक्षु :- .. जिम्मेदारी तो है न?

उत्तर :- कौन-सी जिम्मेदारी. संसारकी अलग बात है. लेकिन इस प्रकारका परिचय मत करना. वह कहेगा, मैं तुमको बात कहता हूं. वह बुद्धिवाला हो. नहीं, विपरीत श्रद्धाकी बात हमें नहीं सुननी है. ... हो तो कहे, नहीं, हमें वह बात नहीं सुननी है. समझमें आया? वह कहते हैं. कुटुंब छोड देना, देस छोड देना, घर छोड देना. मिथ्यात्व तीव्र हो और अपनी बुद्धि अल्प हो और उसका विपरीत संस्कार पडा हो तो छोड देना उसको. चाहे कुटुंब हो तो भी छोड देना. ओहोहो..! यह जब मिथ्यात्वके संस्कार छोडे नहीं और दूसरा छोड दे, तो क्या छोडा? धर्म छोड दिया है. समझमें आया? ३०५. ३०५ गाथा है न? अवरक्षा शब्द है न, इसलिये अर्थ समझनेके लिये लेते हैं. ३०५ है न?

जीवरक्षा षट् कायस्य, संकये शुद्ध भावना।

श्रावको सुदृष्टि जलं, फासू जलं प्रवर्तते॥३०५॥

पहला प्रश्न तो यह है कि जबकी षट्कायकी रक्षा शब्द जो पडा है न, वह जबकी रक्षा कर सकते हैं, जैसे अर्थमें नहीं है. क्योंकि छकाय जब तो पर है. परकी पर्याय रक्षा कर सके तो-तो दृष्टि मिथ्यात्व हो गई, परद्रव्यकी पर्याय में करता हूं. समझमें आया? शब्द नहीं समझे तो उलटा अर्थ करे ऐसा है उसमेंसे. देओ! अवरक्षा षट्कायकी. षट्कायकी अवरक्षा करना विभा है. वह तो शब्द है ऐसा. उसका अर्थ सम्यग्दृष्टिको छकायको दुःख होनेका भाव नहीं होता, उसको मारनेका भाव नहीं होता. मरे या अवित रहे, वह तो

उसकी पर्यायिकी लायकत है. उसका आयुष्य ढो तो नहीं मरे, नहीं ढो तो मरे ढय उसके करण.

शुद्ध सम्यग्दर्शनकी भावना करनेवाला श्रावकको शुद्ध दृष्टि रभनेवाला सम्यग्दर्शन शुद्ध ज्ञाता-दृष्टा ँसा भान है. छकायके प्राणियोंकी रक्षा करना.. लंबा-लंबा लिभा है, भाई! छ कायकी ञवरक्षा अथवा उसको नहीं मारना ँसा भाव उसको ढोता है. है शुभभाव. छकायके ञवको नहीं मारना, है तो शुभभाव, धर्म नहीं. पुण्यभाव (है). उससे परकी रक्षा कर सकते हैं ँसा (है) नहीं. परकी रक्षा करना माने तो मिथ्यादृष्टि है. परद्रव्यकी पर्यायिका कर्ता ढोता है. समजमें आया? ढोपहरको चलता है न? समजे बिना शास्त्रके अर्थके अनर्थ करे, मिथ्यात्व पोषे, उसका संग छोड देना. देभो!

‘जीवरक्षा षट् कायस्य, संकये शुद्ध भावना’ समजमें आया? ‘श्रावको सुदृष्टि’. श्रावक शुद्ध दृष्टि रभनेवाला. ‘फासू जलं प्रवर्तते’. प्रासुक जल काममें लेते हैं. काममे लेते हैं, यानी क्या? ँसा भाव आता है. कोई प्राणीको दुःख न ढो, .. को दुःख न ढो. पडिमाधारीकी बात ली है. ँसा भाव आता है. परकी क्रिया अपनेसे ढोती है, ँसा वे मानते नहीं. परंतु ँसा भाव (आता है कि) कोई प्राणीको दुःख न ढो. जल (ञवोंकी) रक्षा (के लिये) गालन... छानके (उपयोग करते हैं). क्रिया तो परकी है, ढां! परको आत्मा कर सकता नहीं. छानन-ज्ञाननका कर्ता ढो तो मिथ्यादृष्टि है. समजमें आया? ञैनधर्म यानी वस्तुका स्वभाव समजना मला अलौकिक बात है. समजमें आया? छकायकी रक्षाका आ गया न? अब, उरुप. श्रावकोंके आचारका सब वर्णन है, ढां! सार-सार गाथा ली है.

देह देवलि देवं च, उवइद्धो जिनवरंदेहं।

परमेष्ठी संजुत्तं, पूजं च शुद्ध सम्यक्त्वं॥३२५॥

सम्यग्दृष्टि, निश्चयसे अपने देहमें परमात्मा बिराजता है, ँसा मानता है. अपना भगवान देहदेवलमें बिराजता है. समजमें आया? अपना भगवान बाहर नहीं है. ‘देह देवलि’ शरीररूपी मंदिरमें. आत्मारूपी देव. मैं ढी परमेश्वर हूं. अनंत गुणका धाम, अनंत आनंदका कंद, अनंत केवलज्ञानकी भेलको प्रगट करनेका बीज. अनंत-अनंत केवलज्ञान.. केवलज्ञान.. केवलज्ञान साद्विअनंत, ँसी पर्याय अनंत. केवलज्ञान अेक समयकी पर्याय है. दूसरे समय दूसरी ढोती है, तीसरे समय तीसरी ढोती है. केवलज्ञान, ढां! वही केवलज्ञान नहीं रहता. समय-समयकी केवलज्ञानपर्याय साद्विअनंत (रहे), उसका बीज-पेट उसके आत्मामें है, आत्मामें है. मेरमेंसे केवलज्ञानकी पर्याय भले, ँसा मैं (हूं). ँसा देहदेवलमें बिराजमान भगवान, उसको अंतरमें अनुभवसे प्रतीत करना, उसका नाम श्रावकाचार सम्यग्दर्शन है. समजमें आया?

पुनः, ञिनेन्द्रोंने कला है. देभो! ‘उवइद्धो जिनवरंदेहं’, ‘उवइद्धो जिनवरंदेहं’. ञिनेन्द्रोंने ँसा कला है. तीनलोकके नाथ परमेश्वर वीतराग, सौ ँन्दोंके पूजनिक. मलावीर आद्वि अनंत

तीर्थंकरो, सीमंधर आदि परमात्मा बिराजमान. विद्यमान आता है. ममल पाहुडमें आता है, ममल पाहुडमें आता है. वर्तमान विद्यमान सीमंधर भगवान आदि. ममल पाहुडमें आता है. थोडा-थोडा सब देख लिया है. समझमें आया? थोडा-थोडा. अक मल्लिनेमें १२ (ग्रंथ) पढे. हमें तो कितने समयसे होता है लेकिन... समझमें आया? 'उवइट्टो जिनवरंदेहं' जिनवरेन्द्रोंने यह उपदेश किया है. समझमें आया? बाकी बाह्य मंदिर आदि व्यवहार है. पुण्यबंधका कारण है. भक्ति, पूजा, यात्रा पुण्यबंधका कारण है. वास्तविक देव यहां बिराजता है. समझमें आया?

'परमेष्ठी संजुत्तं'. कैसा है? सिद्ध परमेष्ठी गुणों सहित है. मैं तो पूर्ण सिद्धके जितने गुण हैं, उतने पूर्ण मेरेमें है. जैसा परमेष्ठी मैं हूं. जैसी सम्यग्दृष्टिकी दृष्टि अपने स्वभाव पर होती है. ज्ञाता-दृष्टा मैं पूर्ण अनंत आनंदका कंद हूं. राग उत्पन्न होता है, वह मेरा कर्तव्य नहीं, मैं ज्ञाननेवाला हूं. देखकी किया होती है, मैं ज्ञाननेवाला हूं. जैसा सम्यग्दृष्टि अपने आत्माको सिद्ध समान (मानता है). उसकी भक्ति, पूजा शुद्ध सम्यग्दर्शन है.

भक्तिकी व्याख्या क्या? अपने पूर्णानंद शुद्ध स्वरूपमें अकाग्रतासे सम्यग्दर्शन करना वह भक्ति है. वह निश्चयभक्ति है. समझमें आया? भगवान आदिकी भक्ति साक्षात् तीर्थंकर हो तो भी वह भक्ति, भगवानके समवसरणमें होती है वह व्यवहार भक्ति है. सेठ! अपना भगवान यहां उनके पास नहीं है. .. यहां भगवान है. समवसरणमें भी गणधरो भगवानकी पूजा करते हैं. समझते हैं कि शुभभाव है. समझमें आया? श्रावक भी मणिरत्नसे ... शुभभाव है. परद्रव्यका लक्ष्य है तो शुभभाव है. समझमें आया? मुक्तिका मार्ग नहीं. परंतु बीचमें व्यवहार आये बिना रहता नहीं. ये दो बात लोग करते हैं, देखो! यहां कहां.

'पूजं' अपना आत्मा पूज्य है, भक्ति करनेवायक है. अजंजानंद प्रभु अक विकल्पकी गंध जिसमें नहीं, पूर्णानंद परमेश्वर, जिसकी अक-अक गुणमें अनंती शक्ति, जैसा अनंत गुणका प्रभु भगवान, जिसमें अक-अक गुणकी अनंती पर्याय. समझमें आया? जैसा अपना आत्मा निज कारणप्रभु, उसकी अंतर दृष्टि करना, अकाग्र होना, वही उसकी भक्ति और पूजा है. समझमें आया? वही भक्ति और पूजा संवर, निर्जराका कारण है. समझमें आया? ..चंद्रज! बहुत कठिन (पडता है) लोगोंको. जे.. सोनगढ (वाले जैसा कहते हैं). अरे..! सोनगढ नहीं, ये तो भगवानकी बात है, सुन तो सही.

मुमुक्षु :- ...

उत्तर :- हां. अपने आप ही है अंदरमें. ... भाव आता है बराबर है. शुभभाव आता है, भक्ति, पूजा. ईन्द्रों नाचते हैं. शास्त्रमें आता है. समझमें आया? ... विकल्प आया, उससे तीर्थंकर गोत्र बंधता है. विकल्प राग है. आहंसा..! समझमें आया? थोडाशकारण



भावना है न? दर्शनविशुद्धि अकेले सम्यग्दर्शनकी बात नहीं है. सम्यग्दर्शनसे बंध पडता ही नहीं. क्योंकि सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः. सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र निर्विकल्प श्रद्धा, अनुभव और स्थिरता मोक्षमार्ग है. मोक्षमार्गसे बंध होता ही नहीं. वह बात यहां कलते हैं. तारुणस्वामी यह कलते हैं कि सम्यग्दृष्टिको षोडशकारण भावनाका राग आता है, मिथ्यादृष्टिको नहीं. और आया वह राग पुण्यबंधका कारण है. आलाहा..! समजमें आया?

षोडशकारण भावना भायी है. किसने? जिसने. तथा अरिहंतपदकी भावना भायी है. वह तो अक ही बात है. 'अरहंत भावनं' है न? दो बोल लिये हैं न? षोडश भावना भायेमें 'अरहंत भावनं' (है). वह तो तीर्थंकरपनेका विकल्प आया. समकित्तिको आता है, यह बताना है. श्रद्धामें ठिकाना नहीं है, मिथ्यात्व (है) और हमें षोडशकारण भावना है. कहांसे आयी तेरे? ये कलते हैं. समजमें आया? करो, धर्म प्रभावना और करो दुनियामें ऐसा. तीर्थंकर गोत्र बंध ज्ञयेगा. करो, वैयावय्य और करो ऐसा. कलते हैं कि, मूढ है. सम्यग्दर्शन बिना तेरा ऐसा विकल्प कभी तीन कालमें आता नहीं. कलो, समजमें आया? तथा अरहंत भावना भाये. लो, तीन पदार्थ स्वरूप. तीन यानी सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र. समजमें आया? सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्रस्वरूप तीर्थंकर पूर्ण पांच ज्ञानमय होते हैं. यौबीसमें सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र पूर्ण हुआ. किसको? जिसने अपना सम्यग्दर्शन स्वभावको प्रगट किया, उसमें जो विकल्प आया, तीर्थंकर गोत्रका बंध हुआ वह तीर्थंकर भविष्यमें होंगे. परंतु वह विकल्प और प्रकृतिसे तीन दर्शन-ज्ञान-चारित्र पूर्ण होंगे, ऐसा नहीं. लेकिन उस अणुकी ऐसी लायकात है कि अगले भवमें दर्शन, ज्ञान, चारित्र अपने स्वभावके कारण पूर्ण करेगा. विकल्प आया वह राग है, बंध पडा वह जड प्रकृति है. समजमें आया?

कोई कले कि, देओ भैया! तीर्थंकर गोत्र बांधा. तो तीर्थंकर गोत्र बांधा है उससे केवलज्ञान पायेगा. तीर्थंकर प्रकृति बंधसे केवलज्ञान पाये तो वह तो बंधकी प्रकृति जड लुयी. और जिस भावसे बांधा वह भाव तो आस्रव, उदयभाव है, राग है. उदयभावसे बंध पडता है. क्या क्षयोपशमभावसे बंध पडता है? पांच भाव है. उदय, उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक और पारिणामिक. उदयभावसे बंध पडता है. तीन काल तीन लोकमें कोई भी प्रकृतिका नया बंध पडो, (वह) उदयभावसे (पडता) है. क्षयोपशम, उपशम, क्षायिकसे बंध पडता नहीं. जबर नहीं और ऐसे ही लगा दे. देओ भैया! षोडशकारण भावना भायी, तीर्थंकर लोगा. तीर्थंकर प्रकृति बांधी उस कारणसे केवलज्ञान पायेगा. तीर्थंकर प्रकृति तो अणुव है. और जो भाव था वह तो उदयभाव राग है. राग और अणुवसे केवलज्ञान लोगा? ईश्वरचंद्रज्ज! बडी कठिन बात.

मुमुक्षु :- भावना भाते हैं..

उत्तर :- भावना भाते नहीं, आ जाती है. भावना भाते हैं, ऐसा कला है. वह

अर्थ अभी नहीं किया है.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- विकल्प आता है, उसको भाते हैं ऐसा करनेमें आता है. समझमें आया? और वह भी बात ऐसी है कि कोई तीर्थंकरका द्रव्य हो, उसको विकल्प आता है. अनादिकी श्रेणीकी स्थिति उसकी ऐसी है. सब ऐसा भाव करे, ऐसा होता ही नहीं. थोड़ी सूक्ष्म बात है. वह तो जो तीर्थंकर होनेवाला श्रव है, उसके क्रममें ऐसी विकल्पकी दशा चारित्रमें भीचमें आती है. ऐसी उसमें योग्यता पडी है. दूसरेमें ऐसी योग्यता है नहीं. समझमें आया? चारित्रदोषकी विपरीतताका वह कण है, परंतु वह सम्यग्दृष्टि तीर्थंकर होनेवाले हैं, ऐसी उसमें योग्यता है. उसको ऐसा विकल्प आता है. लेकिन जानते हैं कि आस्रव है, मुझे छितकर नहीं है. बंध पडा वह मुझे छितकर नहीं है. परंपरासे मुक्ति होती है ऐसा कथन शास्त्रमें आता चले, लेकिन उसका अर्थ है कि उससे होता नहीं. ओहोहो..! करो, षोडशकारण भावना, लगाओ ऐसा. आठ कर्मकी पूजा.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- वह शुभभाव है, शुभभाव है, भैया! आया वह शुभभाव है, धतना है अस. फिर समझना दूसरी चीज है. विकल्पका विवेक और अश्रव परतत्त्वका विवेकसे भिन्न भगवान है. सम्यग्दृष्टिने अंतरमें पहलेसे स्वीकार किया है. जितना उदयभावका विकल्प आयेगा वह मेरी चीज नहीं. मुझे उपादेय नहीं. षोडशभावना उपादेय नहीं. ऐसा सम्यग्दृष्टि मानते हैं. देय तरीके है, परंतु आये बिना रहता नहीं. उसकी योग्यता ऐसी है तो आती है. आहोहो..! जगतको कठिन (पडे). तत्त्वकी सत्यता सुननेमें आयी नहीं. पंडितशु! यह तो सर्वज्ञ पंथ है. वीतराग त्रिलोकनाथका पंथ है. धन्द्रों मानते हैं. तीर्थंकरो कहते हैं, गणधरो स्वीकारते हैं. दो-चार आदमी, पचीस-पचास लोग मान ले ऐसी यह चीज है? समझमें आया?

कहते हैं, पांच ज्ञानमय होता है. कौन? वह तीर्थंकर सम्यग्दर्शन सहित है, उसकी भावनामें पूर्ण शुद्धि करनेका भाव है. भीचमें ऐसा विकल्प आया तो उससे होता है ऐसा नहीं. और वह राग भी जब छेदेगा तब केवलज्ञान होगा. और केवलज्ञान हुआ तब तीर्थंकर प्रकृति बंधी (थी) उसका पाक-विपाक आयेगा. केवलज्ञान होनेके बाद प्रकृतिका पाक आता है. तीर्थंकर प्रकृतिका उदय १३वें (गुणस्थानमें) आता है. नीचे आता ही नहीं. आहोहो..! क्या किया तीर्थंकर प्रकृतिने आत्माको? परपदार्थ आत्माको क्या करे? स्वभावमें सहायक होता है? बिलकूल नहीं. विकल्प भी आया था, वह आगे जाकर स्वप्नमें स्थिर हुआ, विकल्प छूट गया, प्रकृति रह गई. जब केवलज्ञान... वह कहते हैं, पांच ज्ञानमय हुआ, तब तीर्थंकर प्रकृति बंधी थी, पाकमें-उदय आया १३वें गुणस्थानमें. केवलज्ञान हो गया. सेठ!

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- दूसरेको लाभ.. जिसकी उपादानकी योग्यता होती है, उसको निमित्त होता है. सब तत्कार है. बहुत चर्चा चल गई है. जिसकी उपादानकी लायकता हो उसे वाणी निमित्त होती है. वाणी क्या करे? अनंत बैर तीर्थकरके पास गया है. अनंत बार दिव्यध्वनि सुनी. अनंत बार भगवानकी पूजा समवसरणमें छन्दके साथ की. क्या हुआ? मूल चीजकी क्या दृष्टि है? मूल चीज क्या है? अपना स्वआश्रयकी क्या चीज प्रगट होती है, (उसका भान नहीं, तो भगवान क्या करे? भगवान तो वहां बिराजते हैं. क्या?

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- उदय. जडका उदय-पाक आता है. समवसरण आदि रचा जाता है. केवलज्ञान तो हो गया है. केवलज्ञानमें क्या प्रकृतिने मद्दत की? पाक तो १३वेंमें आया. आलाला..! छसलिये यह गाथा ली है. समजमें आया? ३४६ है. ३४६.

शास्त्र भक्ति. 'ज्ञानगुणं च तत्त्वारी, श्रुतं पूजा' ऐसा लिखा है. देओ! सम्यक् श्रुत किसको कहते हैं, उसका सम्यक्दृष्टिको विवेक है. चार अनुयोग. द्रव्यानुयोग, चरणानुयोग, करणानुयोग, समजमें आया? कथानुयोग. ये चार किसको कहते हैं? किसका अभ्यास करना? सम्यक्दृष्टिको सब मालूम है. वह बात ली है. देओ! वह लेंगे, हां! चार अनुयोग. बादमें चार अनुयोग लेंगे. अभी चार अनुयोग किसको कहना? द्रव्यानुयोग किसको कहना? अभ्यास किसका करना, यह मालूम नहीं. तो श्रावकको मालूम है, सच्ये श्रावकको.

ज्ञान गुणं च तत्त्वारी, श्रुतं पूजा सदा बुधै

धर्म ध्यानं च संजुतं, श्रुतं पूजा विधीयते॥३४६॥

'ज्ञान गुणं च तत्त्वारी' चार अनुयोग. समजमें आया? चार अनुयोगके नाम नहीं आते. सेठ तो ना कहते हैं. ... देओ! ज्ञान गुणका निमित्त शास्त्र क्या है? चार प्रकारके शास्त्र हैं न. 'तत्त्वारी'. 'श्रुतं पूजा सदा बुधै'. 'बुधै' नाम ज्ञानियोंको श्रुतपूजा करनी है. श्रुतपूजा नाम भावश्रुत पूजा अंदरमें करनी चाहिए. अंदरमें भावश्रुत दर्शन आश्रयमें सम्यक्दर्शन हुआ है तो सम्यक्में स्वसंवेदन करके भावश्रुतकी वृद्धि करनी, वह भावश्रुत पूजा है. वह अंदरमें संवर, निर्जरा है. सम्यक्दर्शन सहित. बाह्य द्रव्यश्रुतकी पूजामें विकल्प है. शुभराग है. सम्यक्दृष्टिको ऐसा भाव आता है. समजमें आया? 'तत्त्वारी, श्रुतं पूजा सदा बुधै'.

'धर्म ध्यानं च संजुतं' भाषा यह ली है. ऐसा नहीं है. धर्मध्यान सहित ही होना चाहिए. तो धर्मध्यान तो सम्यक्दृष्टिको ही होता है, अज्ञानीको धर्मध्यान होता नहीं. अपना स्वभाव ज्ञायक चिदानंद परिपूर्ण प्रभु, किसीका कर्ता-हर्ता है नहीं. किसीकी सहायतासे मेरी दशा प्रगट हो, ऐसा मैं नहीं हूं. ऐसी अंतर अनुभवमें प्रतीति हुई, ऐसे धर्मध्यान सहित

श्रुतपूजा करनेका (भाव आता है). श्रुतपूजाके दो अर्थ है. भावश्रुत, द्रव्यश्रुत. भावश्रुत चार अनुयोगक अंदरमें सम्यग्ज्ञान प्रगट करना. स्वभावके आश्रयसे अेकाकार होकर. द्रव्यश्रुत बाहर है, उसकी भक्ति वह विकल्प है. अपना स्वभाव भावश्रुत प्रगट करना वह निर्विकल्प पूजा है. समझमें आया? अकेली पूजा श्रुतकी करे और समझे नहीं कुछ. सेठ! करो पूजा. क्या है? वह तो अज्जव शास्त्र है. उसकी पूजामें क्या है? करो पूजा, भाई! शास्त्रमें भगवानके भाव भरे हैं. नहीं. ऐसा कहते हैं. भगवानकी पर्याय भगवानमें है, वाणीकी पर्याय वाणीमें है. वह तो निमित्तसे कहनेमें आया-जिनवाणी. जैसे जिनप्रतिमा है, वैसे जिनवाणी है. वाणीमें क्या जिन आ गये हैं? वीतरागका भाव आया है उसमें? वह तो जड परमाणुकी पर्याय है. उसकी परमाणुकी पर्यायमें चेतनकी पर्याय आयी मानना, ऐसा मिथ्यादृष्टि मानते हैं. समझमें आया? जैसे भगवान स्थापना निक्षेप है. उसमें भाव अरिहंत निक्षेप मानना वह विपरीत मान्यता है. समझमें आया? सेठ! यहां तो तोल-तोलकर (भात आती है). हीरेको तोलकर लेते हैं न? उसके कांटेमें थोडा भी आगे-पीछे नहीं होना चाहिए.

अेक रतिभार... हमारे भाई कहते थे न? बेचरभाई. (संवत्) १९९९के चातुर्मासमें हम यहां थे. अेक हीरा, साठ एज्जरका अेक हीरा.. लाये बतानेको. हीरेका व्यापारी है न. कल आये थे न. हीराका व्यापार है, बडा व्यापार है. बेचरभाई लाये थे, अेक अस्सी एज्जरका, अेक साठ एज्जरका. साठ एज्जरका था वह छोटा था. ... अेक रतिका दस एज्जर रुपया लेते हैं. अेक रतिका दस एज्जर. समझे? रति समझते हो? तीन रतिका वाल. वह सब चला गया. अभी दूसरी गिनती चलती है. पहले ऐसा था. तीन रतिका वाल, सोलह वालका गट्टियाणुं. गट्टियाणुं आधे रुपयेका. बत्तीस वालका अेक रुपया. रुपयाभार. अेक रुपयाभार बत्तीस वाल होता है. ९६ रतिका अेक तोला. रति.. रति. .. था न? अेक रतिका दस एज्जर रुपया. वह कांटा कैसा होगा? उसे तोलनेवाला कांटा कैसा होगा? कांटा समझे? कांटा कहते हैं? उसका पट्टा है न? पट्टा. ... हमे मावूम नहीं. वह जहां रहते थे, र्तना होता है. जैसे गीपर-नीचे नहीं होता. समझमें आया? उसका पट्टा है न? पट्टा. थोडा गिंचा होता है. नीचे धक्का लगे तो डेरकार हो जाये. चार मन चावलको वजन नहीं करना है. पट्टा र्तना सूक्ष्म (होता है). थोडा-सा गीपर-नीचे हो तो तोलमाप हो जाता है. समझमें आया? अेक रतिका दस एज्जर रुपया. अेक अस्सी एज्जरका हीरा था. ... समझमें आया? छह रतिभार हुआ न? साठ एज्जरका. और दूसरा .. अस्सी एज्जरका. ...

यह तो सर्वज्ञ वाणीकी तुलना (होती है). हीरा तो धूल है. वीतराग ज्ञानीका ज्ञान तोलना, उसका सम्यग्ज्ञानका कांटा बराबर सूक्ष्म होना चाहिए. समझमें आया? थोडा भी डेर पडे तो सम्यग्ज्ञानकी तुलना यथार्थ कर सके नहीं. भीजाभाई! ... द्रव्यानुयोगकी अेकताका लेते हैं. है न द्रव्यानुयोग? उप६. यह पहले चल गयी है. उप६.

द्रव्यानुयोग उत्पादंते, द्रव्यदृष्टि संजुत्तं।

अनंतानंतं दिश्यंते, स्वात्मानं व्यक्त रूपयं॥३५६॥

श्रावक सम्यग्दृष्टिको द्रव्यानुयोगका अभ्यास करना. समझमें आया? चार अनुयोगका अभ्यास. .. आ गया है. द्रव्यानुयोगमें सार ... कहते हैं. द्रव्यानुयोगका अभ्यास करना चाहिए. उसका अर्थ यह. द्रव्यानुयोग अंदरमें स्वभावमें उत्पन्न करना. और बाह्यमें द्रव्यानुयोग शास्त्रका अभ्यास करना. द्रव्यानुयोगका अभ्यास करना. द्रव्यानुयोग किसको कहते हैं? समझे?

जिसमें आत्माका वर्णन हो, द्रव्यका वर्णन हो, गुण-पर्यायिका वर्णन हो, उसके अस्तित्वका वर्णन है, जिसमें अभेद, भेद क्या चीज है उसका वर्णन हो. 'द्रव्यानुयोग उत्पादंते'. उसका अभ्यास श्रावकोंको हमेशा करना. वह शास्त्र भक्तिमें, शास्त्र कर्तव्यमें हमेशा विकल्प आता है. निश्चयमें अंतरमें द्रव्यानुयोगकी शुद्धि प्रगट करना. बाहरमें ऐसा विकल्प श्रुतभक्तिका, श्रुतवांचनका हमेशा द्रव्यानुयोगका अभ्यास (होता है). यहां तो अभी द्रव्यानुयोग किसको कहना भबर नहीं, तो अर्थ कैसा करना वह भावूम ही नहीं है.

सम्यग्दृष्टि होकर 'द्रव्यदृष्टि संजुत्तं'. साथमें द्रव्यार्थिकनयसे शुद्ध आत्माकी दृष्टि भी प्राप्त करनी चाहिए. अकेले द्रव्यानुयोगका अभ्यास नहीं. समझमें आया? .... पैसेका. सेठी! पैसेका- ... ओक साधु कहता था कि सब वीतरागस्वभावी. सामनेवालेने कहा, हम वीतरागी कैसे? उसने कहा, आप सब वीतराग हो. हम वीतराग कैसे? उसे ऐसा लगा कि, कोई आत्माके लिये कहते होंगे. वीतराग भावूम नहीं? व्युत्त नाम पैसा, राग नाम पैसेका प्रेमी. पैसेको वित्त कहते हैं न? वित्त. वित्त-पैसा. वीतराग है सब. वित्त नाम पैसेका प्रेमी. ऐसे विपरीत अर्थ करते हैं. ... तत्त्वकी भबर नहीं. आत्मा वीतरागी है. आत्माका स्वभाव वीतराग ही है. उसका तो भान नहीं और यह वीतराग लगा दिया. आप सब वीतरागी हो. पैसेका प्रेमी. अरे..! कहां, समझमें आया?

'द्रव्यदृष्टि संजुत्तं'. सम्यग्दृष्टि द्रव्यदृष्टि है. द्रव्य अपना कैसा है, द्रव्यार्थिकनयसे अपनी दृष्टि करके, जो दृष्टि लगायी है, उसका बारंबार अपने स्वभाव सन्मुखमें अभ्यास करना. समझमें आया? 'अनंतानंतं दिश्यंते, स्वात्मानं व्यक्त रूपयं' अपने शुद्ध आत्माके समान जगतके अनंतानंत आत्मा ... सब द्रव्य शुद्ध है. जैसे मेरा आत्मा शुद्ध है, ऐसे सब आत्मा शुद्ध दृष्टिमें आता है. अपनी पर्यायिबुद्धि निकल गयी. सब आत्मा द्रव्यसे शुद्ध है. ऐसा सबको दृष्टिसे देखते हैं. अशुद्ध है तो उसके (पास). समझमें आया? 'अनंतानंतं दिश्यंते, स्वात्मानं व्यक्त रूपयं'. उसका अर्थ वह किया. बाकी अपने आत्माको अनंत-अनंत गुणवाला प्रगट है, ऐसा अंतर दृष्टिमें देखते हैं. ऐसा लेना. समझमें आया?

यहां 'स्वात्मा' शब्द पडा है न? 'अनंतानंतं दिश्यंते, स्वात्मानं व्यक्त रूपयं'. अपना आत्मा अनंतानंत गुणसे भरा प्रगट ही है. व्यक्त नाम प्रगट ही है. कोई गुम

नहीं है. समझमें आया? अंक समयमें अनंतानंत.. वल कल था न? अनंत गुण गुण. जैसे अनंतानंत गुण अपने आत्मामें प्रगट ली पडे हैं. जैसे स्वात्माको द्रव्यानुयोग यानी अंतर्भुज लोकर अब्यास करना, उसका नाम सम्यञ्छिका श्रावकाचार कलनेमें आता है. कल, समझमें आया? ३८२.

दर्शनं यस्य हृदये शुद्धं, दोषं तस्य न पश्यते।

विनाशं सकलं जानंते, स्वप्नं तस्य न दिश्यते।।३९२।।

देषो! क्या कलते हैं? जिसके हृदयमें सम्यञ्छन शुद्ध चैतन्यकी दृष्टि और अनुभव हुआ है, प्रतीत, अनुभव, लान हुआ, शुद्ध है. उसके भीतर कोर दोष नहीं दृष्टिवाक पडता है. पहले वल शब्द आया था. 'दोषं न पश्यते'. दोष दृष्टिमें नहीं दृष्टि, दृष्टिमें द्रव्य दृष्टिता है. दोष जो रागादि लोते हैं, ज्ञानी उसका ज्ञाता-दृष्टा है. समझमें आया? उसके भीतर कोर दोष नहीं दृष्टिवाक (दृष्टा है). अकेला आनंदकंद शुद्ध चैतन्यकी दृष्टि है, पूर्णानंद ज्ञान दृष्टिता है.

'विनाशं सकलं जानंते' सर्व जगतकी धन, वस्त्रादिक परिणति, परिग्रहको विनाशिक ज्ञानते हैं. सम्यञ्छि .. अपने नित्य आत्माको अनुभवमें ज्ञानते हैं और सब पदार्थ, जगतका धन, वस्त्र, मल्ल, मकान, ँङ्कत, कीर्ति विनाशिक मानते हैं. सब नाशवान है, नाशवान है. मेरा आत्मा त्रिकाव आनंद ध्रुव अंक अविनाशी है. जैसे सम्यञ्छि श्रावका आचार कलनेमें (आता है). लो, ये आचार. 'स्वप्नं तस्य न दिश्यते'. स्वप्नमें ली नाशवान वस्तुका राग पैदा नहीं लोता. सपनेमें राग मेरा है, देलकी क्रिया मेरी है, जैसा सम्यञ्छिको लोता नहीं. सपनेमें नहीं आता. सपना जैसा नहीं है. आलाला..! रागका कण उत्पन्न लोता है, वल मेरा नहीं, नाशवान है. देलादि पदार्थ नाशवान है. 'स्वप्नं तस्य न दिश्यते'. सपनेमें ली परको अपना ज्ञानते नहीं. समझमें आया? ३८८ देषो.

अनेक पाठ पठनं च, अनेक क्रिया संजुतं।

दर्शनंशुद्धि न जानंते, वृथा दान अनेकधा।।३९१।।

ये तो कैसे अर्थ करना, कैसे समझना वल ली साथमें आता है. समझमें आया? 'अनेक पाठ पठनं'. अनेक पाठोंका पठना. शास्त्रका, लं! दूसरेकी बात (नहीं है). दूसरा सब तो कुज्ञान है. शास्त्रके अनेक पाठ पठना और अनेक प्रकारसे व्यवहार चारित्रका पालना. दया, दान, भक्ति, व्रत, ब्रह्मचर्य सब पालना और अनेक प्रकारका दान देना. अनेक प्रकार मुनियोंको दान, कङ्गावंतको दान, पंडितको दान, जैसा सब आता है न? निरर्थक है. किसको? यदि शुद्ध सम्यञ्छन अनुभव नहीं क्रिया ज्ञये. अपनी दृष्टि स्वभाव सन्भुज ... सम्यञ्छन न लो, अपनी दृष्टि सुधारी नहीं, उसकी सब क्रिया वृथा झोगट है. पढा-लिखा झोगट है, क्रियाकांङ झोगट है, उसका दान (व्यर्थ है). कल, सेठी! ओलो..! ४००.

दर्शनं यस्य हृदयं दृष्टा, सुयं ज्ञान उत्पाद्यते।

कमठी दृष्टि जथा डिंभं, सुयं त्रिद्वंति बुधैः॥४००॥

यह गाथा पहले अपने आ गयी है. आठ व्याख्यानमें आ गयी है. जिसके मनमें सम्यग्दर्शन विद्यमान है. अपने स्वभावकी दृष्टि, राग-विभावसे त्रिभ, ऐसा प्रथम धर्म प्रगट हुआ है, वहां ही श्रुतज्ञान बढ़ता जाता है. वहां सम्यग्ज्ञान बढ़ता जाता है. सम्यग्दर्शन बिना सम्यग्ज्ञान बढ़ता है नहीं. वहां ज्ञान है नहीं तो अढ़े कहांसे?

‘सुयं ज्ञान उत्पाद्यते’ है न? ‘कमठी दृष्टि जथा डिंभं, सुयं त्रिद्वंति’. जैसे ..की दृष्टिसे, कायबा, कायबा होता है कि नहीं? कछुआ. .. उसी तरह बुद्धिमानोंको .. ज्ञान बढ़ता जाता है. कछुआ ... दृष्टि देता है. कछुआकी ऐसी प्रकृति है कि ... कछुआका निरंतर ध्यान ... की तरफ रहता है. जैसे धर्मीकी दृष्टि बारंबार द्रव्यस्वभाव पर पडती है. वस्तु.. वस्तु.. वस्तु.. वस्तु.. वस्तु. उसकी दृष्टि यहां (है) तो उसका ज्ञान बढ़ता ही जाता है. कछुआकी .. उसकी दृष्टि वहां हमेशा रहे तो बढ़ती जाती है. जैसे सम्यग्दृष्टिकी दृष्टि द्रव्य पर है, तो सम्यक् श्रुतज्ञान बढ़ता ही जाता है. बिना पढ़े बढ़ता जाता है, ऐसा कहते हैं. सेठी! उसका नाम दर्शनशुद्धि कहनेमें आता है. हो गया..

(श्रोता :- प्रमाण वचन गुरुदेव!)

